

孚佑帝君治心妙經

孚佑帝君治心妙經

呂祖曰

天生萬物。惟人最靈。匪人能靈。實心是靈。
心爲主宰。一身之君。役使百骸。區處群情。
物無其物。形無其形。稟受於天。良知良能。
氣拘欲蔽。日失其真。此心既失。此身亦傾。
欲善其身。先治其心。治心如何。即心治心。
以老老心。治不考心。以長長心。治不弟心。
以委致心。治不忠心。以誠格心。治不信心。
以恭敬心。治無禮心。以循理心。治無義心。
以清介心。治無廉心。以自愛心。治無恥心。
以積德心。治爲惡心。以利濟心。治殘賊心。
以匡扶心。治傾陷心。以仁慈心。治暴戾心。

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 人 | 如 | 如 | 以 | 以 | 以 | 以 | 以 | 以 | 以 | 以 | 以 | 以 | 以 | 以 |
| 心 | 彼 | 彼 | 大 | 安 | 施 | 悠 | 正 | 果 | 傷 | 和 | 坦 | 儉 | 謙 | 遜 |
| 得 | 劣 | 亂 | 體 | 分 | 與 | 久 | 教 | 報 | 身 | 平 | 夷 | 約 | 遜 | 遜 |
| 治 | 馬 | 絲 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 |
| 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 |
| 天 | 不 | 不 | 治 | 治 | 治 | 治 | 治 | 治 | 治 | 治 | 治 | 治 | 治 | 治 |
| 下 | 勒 | 埋 | 細 | 搖 | 慳 | 無 | 異 | 謀 | 沉 | 忿 | 危 | 驕 | 傲 | 傲 |
| 清 | 不 | 不 | 務 | 惑 | 吝 | 恒 | 端 | 奪 | 湏 | 怒 | 險 | 奢 | 慢 | 慢 |
| 靈 | 馴 | 清 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 |
| 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 |
| 我 | 如 | 嗟 | 以 | 以 | 以 | 以 | 以 | 以 | 以 | 以 | 以 | 以 | 以 | 以 |
| 故 | 彼 | 呼 | 中 | 自 | 始 | 至 | 禍 | 妻 | 寬 | 忠 | 勤 | 損 | 損 | 損 |
| 說 | 古 | 。 | 正 | 然 | 終 | 信 | 忠 | 女 | 洪 | 厚 | 慎 | 抑 | 抑 | 抑 |
| 經 | 鏡 | 人 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 |
| 。 | 。 | 心 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 |
| 欲 | 不 | 不 | 治 | 治 | 治 | 治 | 治 | 治 | 治 | 治 | 治 | 治 | 治 | 治 |
| 治 | 磨 | 治 | 偏 | 勉 | 反 | 大 | 鬥 | 姦 | 褊 | 刻 | 怠 | 盈 | 盈 | 盈 |
| 人 | 不 | 不 | 袒 | 強 | 覆 | 疑 | 狠 | 淫 | 窄 | 薄 | 忽 | 滿 | 滿 | 滿 |
| 心 | 明 | 純 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 | 心 |
| 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 | 。 |

偈曰：

一切惟心心最危。範圍天地發光輝。
天心即在人心見。人合天心天弗違。

願以此功德。普及於一切。
誦經保平安。消災增福壽。